विनोद कुमार शुक्ल

जन्म	:	1 जनवरी 1937 ।
जन्म-स्थान	:	राजनाँदगाँव, छत्तीसगढ़ ।
निवास	:	रायपुर, छत्तीसगढ़ ।
वृत्ति	:	इंदिरा गाँधी कृषि विश्वविद्यालय में एसोशिएट प्रोफेसर, निराला सृजनपीठ में जून 1994 से जून 1996 तक अतिथि साहित्यकार रहे ।
सम्मान	:	रघुवीर सहाय स्मृति पुरस्कार (1992), दयावती मोदी कवि शेखर सम्मान (1997), साहित्य अकादमी पुरस्कार (1999) ।
कृतियाँ	:	पहला कविता संग्रह 'लगभग जयहिंद' पहचान सीरीज के अंतर्गत 1971 में प्रकाशित । वह आदमी नया गरम कोट पहनकर चला गया विचार की तरह (1981), सबकुछ होना बचा रहेगा (1992), अतिरिक्त नहीं (2001) : सभी कविता संकलन । नौकर की कमीज, खिलेगा तो देखेंगे, दीवार में एक खिड़की रहती थी : सभी उपन्यास । पेड़ पर कमरा, महाविद्यालय : कहानी संग्रह ।
विशेष	:	उपन्यासों का कई भारतीय भाषाओं में अनुवाद । इतालवी भाषा में इनकी कविताओं एवं एक कहानी संग्रह 'पेड़ पर कमरा' का अनुवाद हो चुका है । 'नौकर की कमीज' उपन्यास पर मणि कौल द्वारा फिल्म का निर्माण ।

बीसवीं शती के सातवें-आठवें दशक में विनोद कुमार शुक्ल एक कवि के रूप में सामने आए थे । कुछ ही समय बाद उसी दौर में उनकी दो-एक कहानियाँ भी सामने आई थीं । धारा और प्रवाह से बिलकुल अलग, देखने में सरल किंतु बनावट में जटिल अपने न्यारेपन के कारण उन्होंने सुधीजनों का ध्यान आकृष्ट किया था । अपनी रचनाओं में वे आपादमस्तक मौलिक, न्यारे और अद्वितीय थे; किंतु यह विशेषता निरायास और कहीं से भी ओढ़ी या थोपी गई नहीं थी । यह खूबी भाषा या तकनीक पर निर्भर नहीं थी । इसकी जड़ें संवेदना और अनुभूति में थीं और यह भीतर से पैदा हुई खासियत थी । तब से लेकर आज तक वह अद्वितीय मौलिकता अधिक स्फुट, विपुल और बहुमुखी होकर उनकी कविता, उपन्यास और कहानियों में उजागर होती आई है । वह इतनी संश्लिष्ट, जैविक, आवयविक और सरल है कि उसकी नकल नहीं की जा सकती । कविता और कथा दोनों ही विधाओं में जिन्होंने ऐसा करना चाहा, वे मुँह के बल बालू पर गिरे ।

विनोद कुमार शुक्ल कवि और कथाकार हैं । दोनों ही विधाओं में उनका अवदान अप्रतिम है । पिछले दशकों में उनके तीन उपन्यास प्रकाशित हुए जिन्होंने हिंदी उपन्यास की दशा-दिशा पर निर्णायक प्रभाव डाला । इन उपन्यासों ने हिंदी उपन्यास की जड़ता और सुस्ती तोड़ी तथा कथाभाषा और तकनीक को एक रचनात्मक स्फूर्ति दी । उनके कथा साहित्य ने बिना किसी तरह की वीरमुद्रा के सामान्य निम्न मध्यवर्ग के कुछ ऐसे पात्र दिए जिनमें अद्भुत जीवट,

जीवनानुराग, संबंधबोध और सौंदर्य चेतना है । किंतु यह सदा अस्वाभाविक, यत्नसाध्य और 'हिरोइक्स' से परे इतने स्वाभाविक, निरायास और सामान्य रूप में कि जैसे वह परिवेश और वातावरण का अविच्छिन्न अंग हो । विनोद कुमार शुक्ल का आख्यान और बयान--कविता और कथा दोनों में; मामूली बातचीत की मद्धिम लय और लहजे में, शुरू ही नहीं खत्म भी होता है । रोजमर्रे के, सामान्य व्यवहृत, एक हद तक घिसे-पिटे शब्दों में उनका समूचा साहित्य लिखा गया है । साक्षर या सामान्य शिक्षित किसी भी व्यक्ति को उनका साहित्य पढ़ते हुए कभी भी शब्दकोश देखने की जरूरत न पड़े, ऐसी भाषा है उनकी । पर उन्हीं शब्दों में एक अपूर्व चमक और ताजगी चली आई है और वे अपनी संपूर्ण गरिमा में प्रतिष्ठित दिखाई पड़ते हैं । विनोद कुमार शुक्ल खूब पढ़े जाते हुए किंतु सबसे कम विवेचित लेखक हैं । निश्चय ही, यह भी उनकी अद्वितीयता और मौलिकता का एक और सबूत है । प्रकृति, पर्यावरण, समाज और समय से उनकी संपृक्ति किसी विचारधारा, दर्शन या प्रतिज्ञा की मोहताज नहीं । उनकी संपृक्ति पुराने महान कवियों-लेखकों सरीखी है । आज के समय में वे भारतीय साहित्य का अंग बन चुके हैं ।

यहाँ उनके कविता संकलन 'वह आदमी नया गरम कोट पहनकर चला गया विचार की तरह' से एक कविता 'प्यारे नन्हें बेटे को' प्रस्तुत है । कविता ऊपर कही गई बातों का साक्ष्य पेश करती है । कविता का नायक जो भिलाई, छत्तीसगढ़ का रहनेवाला है, अपने नन्हें बेटे को कंधे पर उठाए अपनी नन्हीं बिटिया से घर के भीतर जैसे कौतुकपूर्ण बातचीत करते हुए पूछता है कि 'बतलाओ आसपास कहाँ-कहाँ लोहा है' । लोहा कदम-कदम पर और एक गृहस्थी में सर्वव्याप्त है । कविता के अंत में यह लोहा अनायास एक दुर्भेद्य प्रतीकार्थता ग्रहण कर लेता है । ठोस होकर भी वह हमारी जिंदगी और संबंधों में घुला-मिला हुआ और प्रवाहित है । वह हमारा आधार है ।

♦ ♦ ♦

“
दुनिया जगत
जगत कुएँ का ।
जिस पर जाने कैसे
चढ़ा एक नन्हा बच्चा ।
आवाज नहीं दी मैंने उसको
चौंककर कुएँ के अंदर गिर जाता तो !!

चुपचाप धीरे धीरे चला
सम्हलकर उठाया मैंने गोद में उसको ।
बस इतना मैं चुप रहा
इतना धीरे चला
बहुत चुप बहुत धीरे चला । ”

– विनोद कुमार शुक्ल

प्यारे नन्हें बेटे को

प्यारे नन्हें बेटे को
कंधे पर बैठा
'मैं दादा से बड़ा हो गया'
सुनना यह ।

प्यारी बिटिया से पूछूँगा-
'बतलाओ आसपास
कहाँ-कहाँ लोहा है'
'चिमटा, करकुल, सिगड़ी
समसी, दरवाजे की साँकल, कब्जे
खीला दरवाजे में धँसा हुआ'
वह बोलेगी झटपट ।

रुककर वह फिर याद करेगी
'एक तार लोहे का लंबा
लकड़ी के दो खंबों पर
तना बँधा हुआ बाहर
सूख रही जिस पर
भय्या की गीली चड्डी !
फिर-एक सैफ्टी पिन, साइकिल पूरी ।

आसपास वह ध्यान करेगी
सोचेगी

दुबली पतली पर
हरकत में तेजी कि
कितनी जल्दी
जान जाए वह
आसपास कहाँ-कहाँ लोहा है ।

मै याद दिलाऊँगा
जैसे सिखलाऊँगा बिटिया को
'फावड़ा, कुदाली,
टँगिया, बसुला, खुरपी
पास खड़ी बैलगाड़ी के
चक्के का पट्टा,
बैलों के गले में
काँसे की घंटी के अंदर
लोहे की गोली ।'

पत्नी याद दिलाएगी
जैसे समझाएगी बिटिया को
'बाल्टी, सामने कुएँ में लगी लोहे की घिर्री,
छत्ते की काड़ी-डंडी और घमेला,
हँसिया, चाकू और
भिलाई बलाडिला
जगह जगह लोहे के टीले ।'

इसी तरह
घर भर मिलकर
धीरे धीरे सोच सोचकर
एक साथ ढूँढ़ेंगे
कहाँ-कहाँ लोहा है–
इस घटना से
उस घटना तक
कि हर वो आदमी
जो मेहनतकश
लोहा है

हर वो औरत
दबी सतायी
बोझ उठाने वाली, लोहा !
जल्दी जल्दी मेरे कंधे से
ऊँचा हो लड़का
लड़की का हो दूल्हा प्यारा
उस घटना तक
कि हर वो आदमी
जो मेहनतकश
लोहा है
हर वो औरत
दबी सतायी
बोझ उठाने वाली, लोहा ।

◆ ◆ ◆

अभ्यास

कविता के साथ

1. 'बिटिया' से क्या सवाल किया गया है ?
2. 'बिटिया' कहाँ-कहाँ लोहा पहचान पाती है ?
3. कवि लोहे की पहचान किस रूप में कराते हैं ? यही पहचान उनकी पत्नी किस रूप में कराती हैं ?
4. लोहा क्या है ? इसकी खोज क्यों की जा रही है ?
5. 'इस घटना से उस घटना तक' –यहाँ किन घटनाओं की चर्चा है ?
6. अर्थ स्पष्ट करें –

   कि हर वो आदमी
   जो मेहनतकश
   लोहा है
   हर वो औरत
   दबी सताई
   बोझ उठाने वाली, लोहा ।
7. कविता में लोहे की पहचान अपने आसपास में की गई है । बिटिया, कवि और उनकी पत्नी जिन रूपों में इसकी पहचान करते हैं, ये आपके मन में क्या प्रभाव उत्पन्न करते हैं ? बताइए ।

8. मेहनतकश आदमी और दबी-सतायी, बोझ उठाने वाली औरत में कवि द्वारा लोहे की खोज का क्या आशय है ?
9. यह कविता एक आत्मीय संसार की सृष्टि करती है पर वह संसार बाह्य निरपेक्ष नहीं है । इसमें दृष्टि और संवेदना, जिजीविषा और आत्मविश्वास सम्मिलित हैं । इस कथन को पुष्टि कीजिए ।
10. बिटिया को पिता 'सिखलाते' हैं तो माँ 'समझाती' है । ऐसा क्यों ?

कविता के आस-पास

1. विनोद कुमार शुक्ल के उपन्यासों को अपने पुस्तकालय से प्राप्त करें और पढ़ कर मित्रों से उन पर चर्चा करें।
2. विनोद कुमार शुक्ल के विभिन्न काव्य संकलनों से अपनी पसंद की पाँच कविताएँ एकत्र करें एवं वर्ग में उनका पाठ करें ।
3. विनोद कुमार शुक्ल समकालीन हिंदी साहित्य के एक प्रमुख स्तंभ हैं, इनके लेखन की विशिष्टताओं पर अपने शिक्षक से जानकारी प्राप्त करें ।
4. भिलाई बलाडिला का उल्लेख कविता में क्यों किया गया है ?
5. विनोद कुमार शुक्ल की एक अन्य कविता **'यह चेतावनी है'** यहाँ दी जा रही है, अपनी कक्षा में इसका पाठ करें एवं इसके कथ्य पर विचार करें–

यह चेतावनी है
कि एक छोटा बच्चा है ।
यह चेतावनी है
कि चार फूल खिले हैं ।
यह चेतावनी है
कि खुशी है,
और घड़े में भरा हुआ पानी
पीने के लायक है
हवा में साँस ली जा सकती है
यह चेतावनी है
कि दुनिया है
बची दुनिया में
मैं बचा हुआ
यह चेतावनी है
मैं बचा हूँ
किसी होने वाले युद्ध से
जीवित बच निकलकर
मैं अपनी
अहमियत से मरना चाहता हूँ
कि मरने के
आखिरी क्षणों तक
अनंतकाल जीने की कामना करूँ
कि चार फूल हैं
और दुनिया है ।

भाषा की बात

1. इस कविता की भाषा पर आलोचनात्मक टिप्पणी लिखिए ।
2. व्युत्पत्ति की दृष्टि से निम्नलिखित शब्दों की प्रकृति बताएँ–
   औरत, लड़की, बेटा, बिटिया, आदमी, लोहा, कंधा, छत्ते, दूल्हा, बाल्टी, कुआँ, पिन, साइकिल, दादा
3. नीचे दिए शब्दों से वाक्य बनाएँ–
   कंधा, दादा, बिटिया, लोहा, गला, घंटी, बैलगाड़ी, घटना, बोझ ।

शब्द निधि

करकुल	:	कलछुल
सिगड़ी	:	जंजीर, लोहे की कड़ाही
समसी	:	संड़सी
खीला	:	मोटी काँटी, लोहे का कंटा
मेहनतकश	:	श्रमिक, अपने श्रम के सहारे जीविका कमाने वाला